3207

"सत्याग्रह दर्शन और उसकी प्रासंगिकता (प्रारम्भ से 1947 तक)"

40

चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के
इतिहास विषय में
प्रस्तुत शोध–सार

06/03/2021

निर्देशिका
प्रो० आराधना
इतिहास विभाग,
चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय
परिसर, मेरठ

शोधार्थी Sachin Kumar
सचिन कुमार
एम०फिल०

इतिहास विभाग
चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय परिसर, मेरठ
2021

शोध सार (Abstract)

स्थानीय स्तर से विश्व के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करने वाला गाँधी दर्शन वर्तमान समस्याओं से किस प्रकार लड़ सकता है? अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गाँधीजी के विचारों का विस्तार कितनी व्यापकता लिये हुए है? आज के इस वैश्वीकृत समाज के समक्ष जो विश्व स्तरीय चुनौतियाँ है, उन्हें देखते हुए गाँधी दर्शन आज भी उतना ही स्वीकार्य है जितना पहले था, कदाचित् उससे भी कहीं ज्यादा। वर्तमान समाज में लक्ष्य प्राप्ति करने एवं अन्यायपूर्ण समाज का विरोध करने के तरीके सर्वाधिक भ्रष्ट रूप ले रहे हैं। अतः लक्ष्य प्राप्ति हेतु साधनों की पवित्रता एवं अन्याय का विरोध करने हेतु सत्याग्रह की अवधारणा सीधे तौर पर प्रत्येक व्यक्ति के लिये उपयोगी सिद्ध हो सकती है। आज गाँधी दर्शन संपूर्ण विश्व को एक नया दिशा–बोध दे रहा है। गाँधी दर्शन इस सदी की एक जीवन पद्धति है। आज जब विश्व एक नये ध्रुवीकरण की ओर अग्रसर है तो गाँधी दर्शन इस नयी सदी में और भी समसामयिक और प्रासंगिक हो गया है। विश्व के प्रत्येक कौने तक गाँधीजी के विचारों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। अमेरिका, एशिया, यूरोप, अफ्रीका में कई क्रांतियाँ ऐसी हुई जिन पर गाँधीजी के विचारों का प्रभाव स्पष्ट रूप से पड़ा और जो अंततः सफल भी हुई। जिनके बाद अन्याय की स्थिति में बदलाव आया। किन्तु वर्तमान विश्व राजनीति की स्थिति को ध्यान में रखते हुए गाँधीवादी सिद्धांतों की व्यावहारिक जीवन में और अधिक उपयोगिता अनुभव की जा रही है।

वर्तमान विश्व में अन्याय के विरोध का तरीका हिंसात्मक, घृणित, तोड़फोड़, आगजनी आदि के रूप में देखा जाता है जिनके परिणाम भी विनाशक व द्वेष पैदा करने वाले होते है। किसी भी राष्ट्र का कोई आंतरिक संगठन हो या बाहरी संगठन निरंतर अपनी मांगो की पूर्ति के लिये सरकार पर दबाव डालते है एवं उनकी मांगो की पूर्ति नहीं होने की स्थिति में हिंसात्मक साधनों का प्रयोग आम बात हो गयी है। यह स्थिति शासनतंत्र के लिये भी परेशानी पैदा करती है और स्वयं व्यक्ति की मांग पूरी भी हो जाये, यह भी सुनिश्चित नहीं है।

गाँधीजी के सत्याग्रह की खूबी यही है कि व्यक्ति को इसकी कहीं बाहर जाकर खोज नहीं करनी पड़ती, वह उसके सामने स्वयं आ खड़ा होता है। स्वयं सत्याग्रह के सिद्धांत में ही यह गुण अंतर्निहित है। गाँधीजी ने कहा था, सत्याग्रह पर अमल करते हुए मुझे शुरू के चरणों में ही यह लग गया था कि सत्य के अनुकरण में विरोधी पर हिंसक वार करने की अनुमति नहीं है, बल्कि उसे धैर्य तथा सहानुभूति से अपनी गलती को दूर करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। सत्य को प्रमाणित करने के लिये आत्मपीड़न का रास्ता भी अपनाया जा सकता है।

Sachin Kumar

गाँधीजी ने दक्षिण अफ्रीका व भारत में सत्याग्रह दर्शन का व्यावहारिक प्रयोग किया व युद्ध के एकमात्र विकल्प के रूप में सत्याग्रह को प्रस्थापित किया। सत्याग्रह का अनिवार्य परिणाम स्थायी शांति में देखा जा सकता है। अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में सत्याग्रह एवं निःशस्त्रीकरण के विचार कहीं–कहीं अव्यावहारिक जान पड़ते है। अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में सत्याग्रह या निःशस्त्रीकरण के संबंध में गाँधीजी द्वारा यदा–कदा अव्यावहारिक सुझाव संभवतया इस कारण रहा होगा कि गाँधीजी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सत्याग्रह के प्रयोग का अवसर नहीं मिला। सत्याग्रह की पद्धति को समयानुकूल बनाने का दायित्व वर्तमान पीढ़ी पर है। साथ ही आने वाली पीढ़ी का यह भी दायित्व है कि वे इस पद्धति को परिस्थितिनुकूल बनाए, किंतु आदर्श के स्तर पर कोई परिवर्तन ना हो। आधुनिक समय मे कुछ नेताओं ने सत्याग्रह का सफलतापूर्वक प्रयोग किया जिससे इस मार्ग की विश्वसनीयता और बढ़ी है। बीसवीं सदी में नेल्सन मंडेला, आंग सान सू की, बाबा आम्टे, सुन्दर लाल बहुगुणा, अन्ना हजारे, इरोम शर्मिला एवं विश्व के बहुत से लोगों ने गाँधीवादी विचारधारा को आधार मानकर अपने आन्दोलनों को सफल बनाया। मार्टिन लूथर ने स्पष्ट लिखा कि किस प्रकार सामाजिक रूपांतरण की अहिंसक क्रिया का प्रयोग उन्होनें अमरीकी अश्वेतों के लिये किया। गाँधीजी से पूर्व विश्व में अहिंसा की पारंपरिक धारणा प्रचलित थी, जिसका तात्पर्य था केवल हिंसा न करना। अब तक अहिंसा का व्यक्तिगत रूप ही दिखाई देता था परंतु गाँधीजी ने अहिंसा के व्यक्तिगत संदेश को जन आंदोलन की सफल तकनीक के रूप में देखा। महावीर स्वामी, बुद्ध ने अहिंसा को व्यक्तिगत क्रियाशीलता के सिद्धांत के रूप में देखा। किंतु गाँधीजी ने इसे एक सामाजिक तकनीक के रूप में बदल दिया।

गाँधीजी के अनुसार हिंसा एक विस्तृत वर्ग में आती है व व्यक्तिगत एवं संस्थागत दोनों स्तरों पर व्यक्त होती है। बुरे विचार, बदले की भावना, क्रूरता, धूर्तता, झगड़ा, छल–कपट, अत्यधिक वस्तुओं का संग्रह व्यक्तिगत हिंसा को प्रकट करते है। जबकि शारीरिक दण्ड, कारावास, संपत्ति दण्ड व युद्ध सरकार द्वारा की गई संस्थागत हिंसा को प्रकट करते है। मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने कहा था, "मानवता को बनाए रखने के लिए गाँधीजी के सिद्धांतों का अनुसरण अनिवार्य है।" अतः इस मानवता को हम एक दिन, एक वर्ष या कुछ वर्षों में हासिल नहीं कर सकते। यह एक ऐसा लक्ष्य है जिसे हमें अपने दैनिक जीवन से प्रारंभ करना होगा। इसके लिए गाँधीजी के संकल्पों को अपनाने की प्रतिज्ञा हमें करनी होगी जो है– मैं पृथ्वी पर किसी से नहीं डरूंगा, मैं केवल ईश्वर से ही भय रखूंगा, मैं किसी के प्रति अपने मन में दुराभाव नहीं रखूंगा, मैं अन्याय के समक्ष सिर नहीं झुकाऊंगा, मैं असत्य को सत्य से जीत लूंगा और असत्य का प्रतिकार करने में हर कष्ट सहूंगा। तब कहीं जाकर हम गाँधी मार्ग पर चलने के हकदार होंगे।

Sachin Kumar